

## जनसंचार के मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारिक सिद्धांत

### (Psychological and Behavioural Theories of Mass Communication)

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद संचार के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर किया गया कार्य संभवतः सबसे महत्वपूर्ण था। मानव मन के प्रभाव का अध्ययन और इससे संबंधित विभिन्न बारीकियों का अध्ययन इसके तहत किया गया। संचार के मनोवैज्ञानिक या व्यवहारिक सिद्धांत मनुष्य के संज्ञानात्मक व्यवहारिक पक्ष से सम्बंधित होते हैं। संज्ञान किसी भी चीज को जानने की कला है। जिसमें मनुष्य की जिज्ञासा संबंधित समस्त गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है। व्यवहारिक सिद्धांत के अंतर्गत मनुष्य के व्यक्तिगत व्यवहार और उसके व्यक्तिगत विचारों की प्रक्रिया से सम्बंधित सम्प्रेषण आते हैं। मनुष्य की संज्ञानात्मक स्थितियों, अभिवृत्तियों एवं व्यवहारों का संबंध मुख्य रूप से मनोविज्ञान का क्षेत्र है। परन्तु इन सभी चीजों का मनुष्य के संचार और उसके प्रभाव तथा व्यवहार संबंधी विभिन्न पहलुओं से गहरा जुड़ाव होने के कारण जहां विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इस विषयों का अध्ययन करके संचार संबंधी सिद्धांतों को समृद्ध किया वहीं विभिन्न संचार विशेषज्ञों ने मनोविज्ञान की विभिन्न अवधारणाओं एवं ज्ञान का लाभ उठाते हुए संचार के क्षेत्र में उसका परीक्षण और सदुपयोग करने की कोशिश की। इसके अंतर्गत आने वाले प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं।

- **संज्ञानात्मक असंवादिता या असंगति का सिद्धांत (Theory of Cognitive Dissonance)**

किसी मनोवृत्ति, संवेग, व्यवहार, मूल्य आदि के संबंध में मनुष्य के ज्ञान, विचार एवं विश्वास को हम संज्ञान कहते हैं। संचार की प्रक्रिया में संज्ञान का काफी महत्व है। हम जिस परिवेश या वातावरण में रहते हैं और जिस तरह से हम अपने वातावरण का संज्ञान करते हैं उसी के अनुरूप हमारा समस्त व्यवहार भी संचालित होता है। संचार में भी उसी की अभिव्यक्ति होती है। यही कारण है कि जनसंचार के विभिन्न विद्वानों ने मनुष्य के संज्ञानात्मक पहलुओं पर गंभीर अध्ययन और विश्लेषण करने का प्रयास किए। इस सिद्धांत का विकास वर्ष 1957 ई. में 'लिओन फेस्टिंगर' (Leon Festinger) ने किया। असंगति का सिद्धांत इस विश्वास पर

आधारित है कि अगर किसी व्यक्ति के दो संज्ञान परस्पर विरोधी हों तो वह संज्ञानात्मक असंगति महसूस करेगा। इसे हम एक उदाहरण से इस प्रकार समझ सकते हैं— यदि कोई व्यक्ति सिगरेट पीता है और वह यह भी जानता है कि सिगरेट पीने से कैंसर होता है तो यह दोनों बातें एक-दूसरे के विरुद्ध हो जाती है। जिसके कारण वह व्यक्ति असंवादिता या असंगति का अनुभव करता है। इस असंगति के कारण उसमें मनोवैज्ञानिक तनाव उत्पन्न होगा और इस असंगति को दूर करने या उसे कम करने का प्रयास करेगा। अंत में वह उसी निष्कर्ष पर पहुंचेगा जो उसके विश्वासों की पुष्टि करे और उसी के अनुसार वह अपने व्यवहार में परिवर्तन करेगा। यदि उसको विश्वास हो जाता है कि सिगरेट पीने से कैंसर होता है तो वह सिगरेट पीना छोड़ सकता है।

लिओन फेस्टिंजर ने संज्ञानात्मक असंगति के सिद्धांत के माध्यम से मनुष्य के इस विरोधाभासों को समझने का प्रयास किया। इनके अनुसार, संज्ञानात्मक असंगति की स्थिति में मनुष्य तीन तरीकों से तालमेल का प्रयास करता है जो इस प्रकार है—

- किसी एक संज्ञान से संबंधित व्यवहार में वह परिवर्तन लाएगा अथवा उस संज्ञान को नकारकर दूसरे संज्ञान को अपने अनुकूल बना लेगा। जैसे कि या तो वह सिगरेट पीना छोड़ देगा, या फिर इस बात को भूलने की कोशिश करेगा कि इससे कैंसर होता है।
- उस असंगति को कम करने के लिए वह कुछ संगत संज्ञानों को भी शामिल कर लेगा, जिससे असंगत संज्ञान का असर वह कुछ कम कर सकें। जैसे कि अगर वह सोचने लगेगा कि इतने सारे लोग सिगरेट पीते हैं तो उनको कुछ नहीं होता तो मेरा क्या होगा।
- अपने असंगत संज्ञान का महत्व कम करने तथा संगत संज्ञान का महत्व बढ़ाने के लिए वह अपने संगत संज्ञान को महिमामंडित करने का प्रयास करेगा।

इस तरह मनुष्य अपना तनाव कम करने के लिए किसी सूचना को जानते हुए भी अस्वीकार कर देगा जो उसके लिए असंगतिपूर्ण होगा। संज्ञानात्मक असंवादिता के सम्बंध में फेस्टिंजर एवं कार्ल स्मिथ ने अपने अध्ययन में बताया कि किस प्रकार व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति को असंवादिता के आधार पर बदलने के लिए प्रेरित होता है। संचारकर्त्ता के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि किसी व्यक्ति पर असंगत सूचना का क्या प्रभाव होता है और वह उस परिस्थिति में किस तरह से निपटने की कोशिश करता है।

\*\*\*\*\*